पड़ोसन भाभी, उनकी सहेली और बेटी को चोदा-3

“पड़ोसन भाभी की बेटी चुद कर चली गई थी. उसके जाने के बाद मुझे भाभी की पहली चुदाई याद आने लगी. मैं भाभी के चूचे चूसने के बाद उनको चोदने की तैयारी कर रहा था. …”

Story By: dinesh roht (dinesh.roht)
Posted: Friday, November 22nd, 2019
Categories: चुदाई की कहानी
Online version: पड़ोसन भाभी, उनकी सहेली और बेटी को चोदा-3

Copyright © Antarvasna part of Indian Porn Empire

पड़ोसन भाभी, उनकी सहेली और बेटी को चोदा-3

 यह कहानी सुनें

इस सेक्स कहानी में अब तक आपने पढ़ा कि मैं पिंकी की कुंवारी बुर में लंड पेल कर चुदाई का मजा ले चुका था. पिंकी चुद कर चली गई थी. उसके जाने के बाद मुझे शान्ति भाभी की पहली चुदाई याद आने लगी. मैं भाभी के चूचे चूसने के बाद उनको चोदने की तैयारी कर रहा था.

अब आगे :

ये सब ऐसा था मानो एक छोटे बालक को एक बार में ही औकात से ज्यादा उपहार मिल गया हो, ठीक वही स्थिति मेरे लंड देव की हुयी थी. मैंने लंड को भाभी की चूत पर रखकर जोर लगा कर पुश किया.

अरे ये क्या … फिसल कर बाहर. दो तीन बार के प्रयास में भी लंड अन्दर नहीं गया.
भाभी बोली- रुकिए.
वो मेरा लंड पकड़ कर बोली- हां अब धक्का दो …

मैंने दिया, तो इस बार सीधे अन्दर घुस गया. पर चूत की गर्मी पाकर लंडदेव ने पिचकारी मारना शुरू कर दिया. खेल शुरू होने से पहले ही खत्म हो गया था.

मैं रुआंसा हो गया, तो भाभी बोलीं- अरे पहली बार के लिए ये बहुत सही प्रयास है … पहली बार तो मेरे पति मेरे दूध पीते पीते ही खलास हो गए थे.

भाभी के साथ सेक्स करने का दूसरी बार का मौका भी जल्द आ गया. भाई साहब किसी काम से बाहर गए थे. शान्ति भाभी औरतों की मजलिस से खुद को बचाते हुए मेरे कमरे में आ गईं.

इस बीच मैंने पूरे मनोयोग से योग सीखना शुरू कर दिया था. जिससे कि सांसों पर नियंत्रण कर सकूं. इस बार का मौका मैं गंवाना नहीं चाह रहा था.

अपनी सांसों पर नियंत्रण रखते हुए पहले मैंने भाभी की गर्दन को चूमना शुरू किया. वहां से बढ़ते बढ़ते दोनों मम्मों के बीच में तथा साथ ही साथ उनके ब्लाउज और ब्रा को भी खोल दिया. उनके दोनों मम्मों को अलग करके मम्मों के बीच के स्थान पर चूमना चालू किया. अब मैं मम्मों को कहां बख्शने वाला था. उनको भी बारी बारी से चूस कर सहला कर भाभी को गर्म करने में मैं पूरी तरह से सफल रहा.

दूसरा प्रयास भाभी की चूत पर विजय पाने की थी. सो मैंने उनका पेटीकोट हटाया. भाभी ने आज भी पेंटी नहीं पहनी थी.
भाभी बोलीं- आपके लिए ही नहीं पहनी है.

मैंने भाभी की चूत चूसने की कोशिश की, तो उन्होंने मना कर दिया और कहा कि कहीं ऐसा न हो कि चूत पीने में ही आपके नलका से पानी गिरने लगे. सो यह अगली बार करना. वो तृतीय अध्याय की कहानी में कर लेना.

मैंने ये सुनकर भाभी की कमर के नीचे तकिया लगा दिया.
भाभी की नजरों में प्रश्न था कि यह क्यों ?
मैंने कहा- पहली बार है, अब मुझे आपकी चूत अच्छे से दिख रही है.
भाभी हंस दीं.

मैं अपने लंड को उनकी चूत पर ऊपर से नीचे, नीचे से ऊपर रगड़ने लगा. मैं बीच फुद्दी पर आता, तो भाभी चिहुंक जातीं. फिर भाभी ने अपने दोनों पैरों को दोनों तरफ फैलाते हुए अपने हाथों से चूत को और फैला दिया. जिससे कि मेरा लंड उनकी फुद्दी को और मजा दे सके.

मैं अभी लंड पेलने की कोशिश ही कर रहा था कि तभी लंड अपना रास्ता ढूँढते हुए गुफा के अन्दर चला गया. लंड के अन्दर घुसते ही मैंने भी आव देखा न ताव … तुरंत राजधानी एक्सप्रेस की गति को पकड़ लिया.

नीचे एक एक्सपर्ट मास्टर की तरह भाभी अपने सर के नीचे दोनों हाथ ले जाकर अपना सर ऊपर करते हुए हँस दीं.
फिर बोलीं- मैं भाग नहीं रही हूँ देवर जी, धीरे धीरे मजा आएगा … ऐसे में आप तुरंत थक जाएंगे.

मैंने चुदाई की गति को कम कर दिया.
जब मैं सामान्य रफ्तार में आया, तो भाभी बोलीं- हां अब ठीक है.

तकिया के कारण भाभी की गांड उठाने की गति ज़रा कम थी, पर चूत के उठे होने के कारण मेरा लंड पूरा अन्दर तक जा रहा था, जिसका वो पूरा आनन्द ले रही थीं.

मेरा प्री-कम के गिरने तथा भाभी का चूतरस के स्त्राव के कारण पच पच फच फच की आवाज और भाभी का मंद मंद कराहना मुझे बड़ा ही आनन्दित कर रहा था.

कुछ देर बाद मेरा अब निकलने ही वाला था कि भाभी ने मुझे कस कर पकड़ कर अपने सीने से भींच लिया. वो भी साथ साथ निकल कर निढाल होकर लेट गईं.

फिर चुदाई के बाद मेरे सर के बाल को सहलाते हुए भाभी बोलीं- मेरा विद्यार्थी कुछ

ज्यादा ही तेज है … सभी पाठ तुरंत याद कर लेता है. अब रात का खाना मेरे यहां खाने आना. वहां तुमको कुछ और भी दिखाऊंगी.

उस मोहल्ले में मैं बहुतों के यहां खाना खा चुका हूँ. खाने के एवज में पढ़ाई के विषयों को कैसे याद किया जा सकता है, उनके बच्चों को वह सब बताता रहता हूँ. कभी कभी तो माँ बाप भी इसमें शामिल हो जाते हैं और वो भी बताने लगते कि वो कैसे याद करते थे.

बेझिझक होकर मैं उनके बच्चों को बताता कि कुछ विषय को याद करने में गाली शब्द को भी बीच में डाल लो, जल्दी याद आ जाएगा. वो लोग भी कहते कि हां ये सही बात है. हम लोग भी इसी तरह याद करते थे.

शाम को बिना कोई तैयारी के भाभी के घर पहुँच गया. पिंकी उस समय पढ़ रही थी. रसायन में पीरियोडिक टेबल याद कर रही थी. पढ़ाने के लिये उसके मास्टर नहीं आये थे. विगत दो दिनों से उसे याद ही नहीं हो रहा था.

मैं उसके करीब बैठा और उससे कहा- इस तरह याद करो … हहे, लिबे, बकनोफने, नामगा, अलसीपसकलारका. देखो बीस के नाम याद हो गए न.

उसको मैंने समझाया तो वो एकदम से खुश हो गयी कि सही में उसने दस मिनट में सब याद करके सुना दिया.

तब तक उसके शिक्षक भी आ गए. हमें भाभी ऊपर मास्टर बेडरूम में ले गयी. रेडियो लगा दिया, जिसमें गाने आ रहे थे साथ ही टीवी भी ऑन कर दी. उसका साउंड म्यूट कर दिया था. उसमें एक ब्लू फिल्म की सीडी लगा दी.

उधर फिल्म चल रही थी, इधर मैंने भाभी के पीछे खड़े होकर उसको चूमना शुरू कर दिया. मेरा एक हाथ उसके वक्षस्थल पर था. भाभी की भरी हुई चूचियों के निप्पलों को बारी बारी

से मसल और सहला रहा था. साथ ही मेरा दूसरा हाथ भाभी की चूत की फूली फांकों को सहला रहा था.

फिल्म का असर और साथ में नारी स्पर्श से मेरा लंड तनने लगा. मेरा लंड भाभी की गांड की दरार पर टक्कर मार रहा था. भाभी ने भी अपने हाथ से लंड को पकड़ लिया और उसे ऊपर नीचे करने लगीं. उस समय फिल्म में चूत चटायी चल रही थी. भाभी मौन भाव से चूत चटायी का निमंत्रण दे रही थीं.

भाभी ने अपनी साड़ी और पेटीकोट उठाते हुए अपनी चूत को मेरे सामने फैला दी. मैंने घुटनों के बल बैठते हुए उसकी चूत को सूंघा. एक विचित्र सा मादक गंध मेरी नाक में समा गया. अफीम के नशे की तरह उनकी चूत पर मेरी जीभ चलने लगी. चुत के रस का विचित्र स्वाद मुझे बड़ा मादक लग रहा था.

भाभी मेरे सर को पकड़ को अपनी चूत को मेरे मुँह पर रगड़ रही थीं. मेरी जीभ जितनी अन्दर जा सकती थी, मैं उतनी अन्दर तक घुसा कर चुत को चाट रहा था.
जैसे मैंने उनके मम्मों को चूसा था, ठीक उसी तरह से मैं भाभी की फुद्दी को भी चूस रहा था.

मेरी जीभ की खुरदुराहट से भाभी कसमसा कर अपनी मुट्ठियों को भींच रही थीं. कुछ ही पलों में भाभी की चूत से रस धारा प्रवाह निकलने लगा था. चुत का कुछ रस मेरे पेट में जा रहा था, तो कुछ लार के साथ नीचे बह रहा था. शायद वो पूरी तरह से झड़ना चाह रही थीं. मगर तभी भाभी ने मुझे खींच कर अपने ऊपर ले लिया.

भाभी की चूत रस से पहले ही नहाई हुई थी. इसीलिए जैसे ही मैंने कड़क लंड को चूत के ऊपर रखा था कि भाभी ने अपनी कमर ऊपर करके खुद से लंड अन्दर करवा लिया. लंड चुत के अन्दर की गर्मी को पाकर एकदम से गुर्रा उठा और उसके बाद तो मैं भाभी की

दनादन चुदायी करने लगा.

चुत चुदायी भी एक ऐसा नशा होता है … जो लंड के स्खलन के बाद ही उतरता है. हम दोनों की आंखें बंद थीं, हमारा पूरा ध्यान केवल चुदाई पर था. ये एक तरह से गहरी समाधि की अवस्था थी, जिसमें इंसान सब कुछ भूल जाता है.

हम दोनों में एक दूसरे को संतुष्ट करने की हसरत थी. अंत में रस स्खलित होते ही एक गजब का अहसास हुआ और हम दोनों निढाल होकर एक दूसरे से लिपट कर ठंडे हो गए.

कुछ पल यूं ही पड़े रहने के बाद मैंने बाथरूम में जाकर चेहरे को साफ किया. भाभी ने मेरे समीप आकर मेरे मुँह को सूंघा कि मेरे मुँह से चूत की मलाई की गंध तो नहीं आ रही.

उनके कहने पर मैंने एक बार फिर से चेहरा साफ किया और मॉउथ वाश से कुल्ला किया. भाभी ने फिर से मुआयना किया. वो मेरे नजदीक आतीं, तो मेरी आंखें बंद हुई जा रही थीं.

भाभी मेरे चहरे के एकदम समीप आ गईं. मैं उसकी सांसों को महसूस कर रहा था. समीप आने के बाद भाभी ने मेरे होंठों को पहले सूंघा और अगले ही पल अपने होंठ रख कर मेरे होंठों को चूसना चालू कर दिया.

कुछ पल बाद जब भाभी हटीं, तो मेरे होंठ सूज चुके थे.

भाभी बोलीं- चूत चुसवाने की मेरी इच्छा कई वर्षों से थी, पर मेरे ये तो एकदम से मना कर देते हैं. तूने आज मेरी वर्षों की दबी हुई इच्छा को पूरा कर दिया.
मैंने शान्ति भाभी को अपनी बाहुपाश में भर लिया और कुछ पल यूं ही एक दूसरे को महसूस करने के बाद मैं भाभी के पास से हट गया.

जब मैं खाने के लिए बैठा, तो पिंकी मुझे बड़ी गौर से देख रही थी. जब भाभी रसोई में गई,

तो पिंकी बोली कि अंकल आपके होंठ को क्या हो गया ?
मैंने बोला- हां … लगता है शायद किसी कीड़े ने काट लिया.

तब तक भाभी आ गई, तो पिंकी चुप हो गयी.
पर प्लेट उठाते समय वो मुझसे बोली- अंकल, माय मॉम इज ए ग्रेट किसर … बी अवेयर.
(अंकल मेरी माँ चुम्बन खोर है … सावधान रहियेगा.)
मैं कुछ नहीं बोला और चुपचाप खाना खत्म करके अपने कमरे पर चला गया.

इसी तरह भाभी के साथ चुदायी क्लास चलती रहीं. दो चीजें भाभी ने कभी नहीं की थीं. एक गांड मरवाना और दूसरा लंड को मुँह में लेना. बाकी मेरी जिंदगी खुशहाल चल रही थी.

एक दिन भाभी एक छुई-मुई सखी को लेकर आईं और मुझसे भाभी बोलीं- थोड़ा इसको संतुष्ट कर दो … बेचारी अभी भी अतृप्त है.
वो दोनों मेरे सामने खड़ी थीं.

शान्ति भाभी के मुँह से इतना सुनते ही दूसरी भाभी शर्मा कर बोली- मुझसे न हो पाएगा.
यह कहते हुए वो भाभी से चिपक गयी.

भाभी ने मुझे इशारा किया तो मैंने उसे पीछे से पकड़ लिया. वो भाभी से चिपकी रही. भाभी ने उसे उकसाने के लिये उसके होंठ को चूसना शुरू कर दिया. उसी समय मैंने पीछे से उसके उरोजों को थामा और सहलाने लगा. मैं दूध दबाने के साथ उसके चूतड़ों को भी सहला देता था.

वो शरमा तो रही थी, पर मना नहीं कर रही थी. मैंने उसके ब्लाउज के भीतर हाथ ले जाकर चूचियों के निप्पल को अपनी चुटकी में दबा लिया. फिर दोनों चूचुकों को गोल गोल

सहलाते हुए मींजने लगा.

दोस्तो, निप्पल का कनेक्शन सीधे चूत से होता है. जैसा मैंने अभी तक सीखा था, उस हिसाब से दूध दबाना बेहद मस्ती देने वाला होता है.

अब वो अपने पैर को फैलाने लगी थी … जिसका फायदा उठाते हुए मैंने अपना एक हाथ उसकी फुद्दी पर रख सहलाना शुरू कर दिया.

चुदाई की मदहोशी भाभी पर छाने लगी थी, जिससे वो जल्द ही कांपने लगी और बोली- दीदी, मुझसे खड़ा नहीं हुआ जा रहा है.

मैंने भाभी के साथ मिल कर उसके सारे कपड़ों को उतार दिया. फिर मैंने उसे सर की तरफ से हाथों को पकड़ा और पैरों को भाभी ने पकड़ लिया. हम दोनों ने उसे झुलाते हुए बेड पर पटक दिया. उसके बिस्तर पर गिरते ही शान्ति भाभी उसके एक दूध को सहलाने लगीं और दूसरे चूचे को चूसने लगीं. शान्ति भाभी उसके दूध को ऐसे चूस रही थीं, जैसे वो कोई एक रसीला आम हो.

नीचे के भाग में मैं अपना कब्जा जमा लिया और उसकी टांगों को पूरा खोल कर उसकी उभरी हुई गोरी सफाचट चूत पर जीभ को रख दिया. अपनी चुत पर मेरी जीभ का अहसास पाते ही वो जोर जोर से हँसने लगी. उसको गुदगुदी हो रही थी
वो बोली- दीदी इनको रुकवा दो, बड़ी गुदगुदी हो रही है.

मैं अपनी जीभ को चुत से हटा कर अपने लंड से सहलाने लगा.

वो छुई मुई सी भाभी अब सेक्स बम बन चुकी थी. उसने अपने दोनों पैरों को हवा में उठा दिया और कामुकता भरे स्वर में बोली- अब सहलाते ही रहोगे क्या … या अन्दर घुसाओगे भी. यहां पर खुजली मची हुयी है और जनाब हथियार घिस कर चमका रहे हैं.

मेरी इस चुदाई की गर्मी से लबरेज सेक्स कहानी में आपको कितना मजा आ रहा है, प्लीज़ मुझे मेल करके जरूर बताएं.

dinesh.roht@gmail.com

कहानी जारी है.

Other stories you may be interested in

विदेशी अंकल की गांड मारी

दोस्तो, मैं आप सबके लिए अपनी एक नयी कहानी लेकर आया हूं. मेरा नाम विकास है. कहानी शुरू करने से पहले मैं आपको अपना परिचय दे देता हूं. मेरी उम्र 25 साल है. मेरे लंड का साइज़ 7 इंच है. […]
Full Story >>>

कॉलबॉय के साथ अमेरिका में सुहागरात का मजा-2

मेरी सुहागरात की सेक्स कहानी के पहले भाग में अब तक आपने जाना कि सुहास और मैंने कैलीफोर्निया में सुहागरात की चुदाई के मजे लेना शुरू कर दिए थे. अब आगे : ज़ब मैं उठी, तो शाम के 6 बज चुके […]
Full Story >>>

पड़ोसन भाभी, उनकी सहेली और बेटी को चोदा-2

इस सेक्स कहानी के पिछले भाग में अब तक आपने पढ़ा कि मैंने शान्ति भाभी की बेटी पिंकी के सामने अपने आपको बेबस पाया था. वो मुझसे लंड दिखाने के लिए कह रही थी और मैं शान्ति भाभी के संग […]
Full Story >>>

कॉल ब्वॉय के साथ बितायी पूरी रात

हैलो फ्रेंड्स … मैं अंजलि शर्मा फिर से अपनी आगे की कहानी लेकर आप सभी के सामने वापिस आयी हूँ. सबसे पहले तो मैं आप सभी लोगों का धन्यवाद करना चाहूंगी कि आप लोगों ने मुझे इतना प्यार दिया, मेरी […]
Full Story >>>

पंजाबी सांड ड्राइवर से घोड़ी बन कर चुदी

सभी पाठकों को मेरा नमस्कार ! मेरा नाम रितिका है, मैं हिमाचल प्रदेश के कुल्लू शहर से हूं। मेरी पहली कहानी मैं बीच सड़क पर रंडी बन के चुदी जनवरी 2018 में प्रकाशित हुई थी जिसे आप सब पाठकों का बहुत […]
Full Story >>>